

छहढललल-दूसरी ढलल

ढसुतकरीी : श्रीढती सलरलकल वलकलस छलडडल

मंगलाचरण

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूं त्रियोग सम्हारिके ॥

छहढालल में ३ मुख्य बलतों कल वरुणन है

१

ढलल

• १. दुख कल है?

२

ढलल

• २. दुख कल कलरण कल है?

३, ४, ५

, ६

ढलल

• ३. दुख से छूटने के उडलड कल है?

दूसरी ढाल की विषय वस्तु

छन्द	विषय वस्तु
1 - 2	संसार परिभ्रमण का कारण, अगृहीत मिथ्यादर्शन
2 - 7	सात तत्त्वों संबंधी भूल
7 - 8	अगृहीत मिथ्याज्ञान, अगृहीत मिथ्याचारित्र का वर्णन
9 - 12	गृहीत मिथ्यादर्शन (कुगुरु, कुदेव, कुधर्म) के स्वरूप का वर्णन
13	गृहीत मिथ्याज्ञान के स्वरूप का वर्णन
14	गृहीत मिथ्याचारित्र के स्वरूप का वर्णन
15	मिथ्याचारित्र के त्याग का तथा आत्महित में लगने का उपदेश



संसार (चतुर्गति) में परिभ्रमण का कारण

ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चर्णवश, भ्रमत भरत दुख जन्म-मर्ण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूँ बखान॥१॥

- मिथ्या दृग-ज्ञान-चर्णवश= मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के वश होकर
- भरत= भोगता हुआ
- भ्रमत= भटकता फिरता है
- तातैं= इसलिये
- इनको= इन तीनों को
- सुजान= भलीभाँति जानकर
- तजिये= छोड़ देना चाहिए
- संक्षेप= संक्षेप से कहूँ
- बखान= वर्णन करता हूँ,



ऐसे मिथ्या दृग-ज्ञान-चर्णवश, भ्रमत भरत दुख जन्म-मर्ण।
तातैं इनको तजिये सुजान, सुन तिन संक्षेप कहूँ बखान॥१॥

दुख का
कारण-

मिथ्यादर्शन, ज्ञान, चारित्र से ही जीव भ्रमण करता हुआ
जन्म मरण के दुखों को भोगता है

इसीलिये क्या
करना चाहिये

सुखार्थी को इन मिथ्याभावों का त्याग करना चाहिए ।

अतः

यहाँ संक्षेप से उन तीनों का वर्णन करता हूँ॥१॥

मिथ्यात्व

मिथ्या

+

त्व =

विपरीत

भाव

मिथ्यादर्शन

- विपरीत
मान्यता

मिथ्याज्ञान

- विपरीत
ज्ञान

मिथ्याचारित्र

- मोह-राग-
द्वेष

संसार
परिभ्रमण का
कारण



मिथ्यादर्शन
-ज्ञान-चारित्र

अतः इन मिथ्याभावों का
त्याग करना चाहिए ।

॥२॥

अगृहीत-मिथ्यादर्शन और जीवतत्त्व का लक्षण

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिनमाहिं विपर्ययत्व।
चेतन को है उपयोग रूप, विन मूरत चिन्मूरत अनूप॥२॥

- जीवादि= जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष
- सरधैं= श्रद्धा करना
- तिनमाहिं= उनमें
- विपर्ययत्व= विपरीत
- चेतन को= आत्मा का
- उपयोग= देखना-जानना
- रूप= स्वरूप
- विन मूरत= अमूर्तिक
- चिन्मूरत= चैतन्यमय
- अनूप= उपमा रहित

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिनमाहिं विपर्ययत्व।
चेतन को है उपयोग रूप, विन मूरत चिन्मूरत अनूप॥२॥

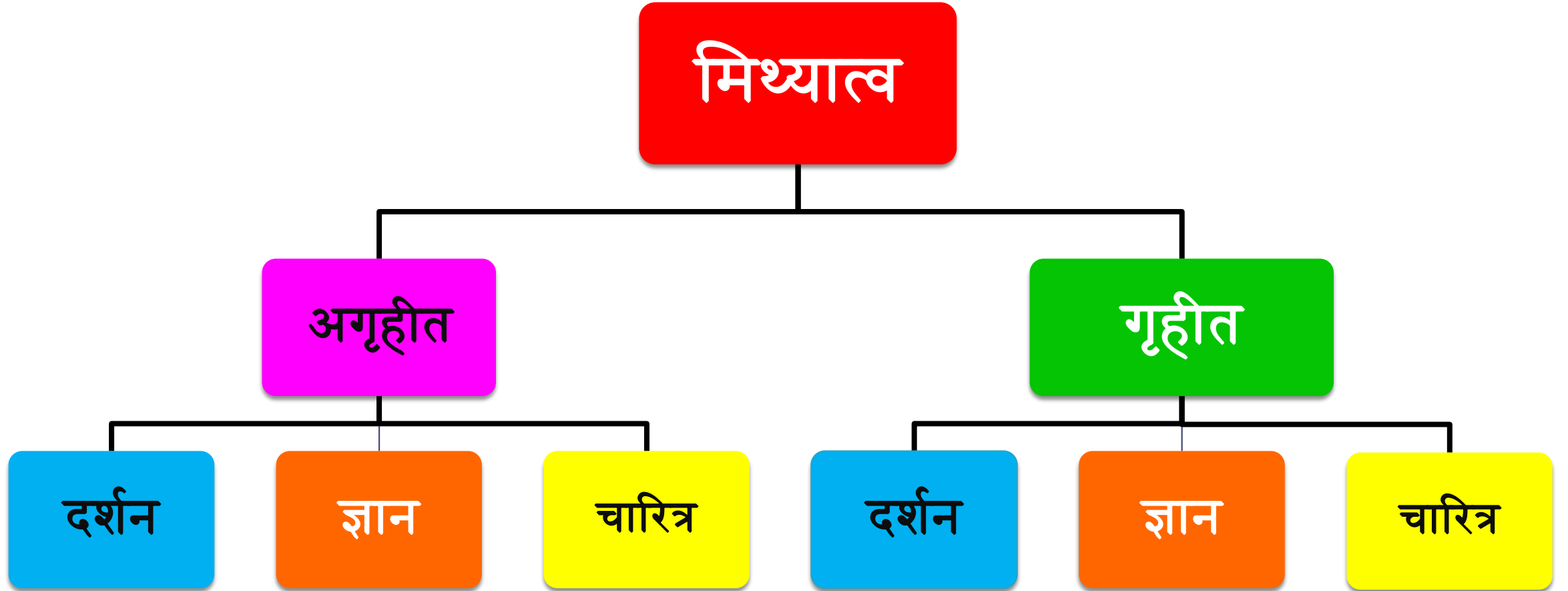
अगृहीत
मिथ्यादर्शन

यह जीव जीवादि ७ प्रयोजनभूत तत्त्वों का विपरीत
श्रद्धान करता है जो कि अगृहीत मिथ्यादर्शन है

जीव का
स्वरूप

जीव ज्ञान-दर्शन उपयोगस्वरूप अर्थात् ज्ञाता-दृष्टा है ।
अमूर्तिक, चैतन्यमय तथा उपमारहित है ।

मिथ्यात्व के प्रकार



अगृहीत मिथ्यात्व



अ+गृहीत= नया नहीं ग्रहण किया



अर्थात् इस भव में जो विपरीत मान्यता नयी ग्रहण नहीं की,



अनादि से बिना ग्रहण किये चली आ रही विपरीत मान्यता

गृहीत मिथ्यात्व



गृहीत= नया ग्रहण किया



अर्थात् इस भव में जो विपरीत मान्यता ग्रहण की

अगृहीत मिथ्यादर्शन

अनादि से प्रयोजनभूत ७ तत्त्वों का
विपरीत श्रद्धान

इसे समझना क्यों आवश्यक है?

क्योंकि ७ तत्त्वों के
सही श्रद्धान से ही
सम्यग्दर्शन
होता है

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥

तत्त्व किसे कहते हैं?

तत् + त्व = वह + भाव

वस्तु का सच्चा स्वरूप

जो वस्तु जैसी है उसका जो भाव

७ तत्त्व

जीव

अजीव

आस्रव

बंध

संवर

निर्जरा

मोक्ष



इन ७ तत्त्वों के सत्य
श्रद्धान से हम ग्यारंटी से
सुखी होंगे
और उनके सत्य श्रद्धान
बिना हम ग्यारंटी से
दुखी ही रहेंगे



ज्ञान-दर्शन
स्वभावी
आत्मा को
कहते हैं

वह चेतन
तत्त्व आत्मा
ही मैं हूँ

जीव तत्त्व



अजीव तत्त्व

ज्ञान-दर्शन
स्वभावी आत्मा
से रहित

तथा आत्मा से
भिन्न समस्त
पुद्गलादि पाँच
द्रव्य

जीव का स्वरूप कैसा है?

उपयोग रूप

- ज्ञान-दर्शन के प्रवर्तन-स्वरूप

चैतन्य की मूर्ति

- ज्ञान की मूर्ति

बिन मूरत

- अमूर्त

अनूप

- जिसकी कोई उपमा नहीं

अरूप (अमूर्त) किसे कहते हैं?

- जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण नहीं पाए जाएँ, उसे अमूर्त कहते हैं ।
- जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाए जाएँ, उसे मूर्त कहते हैं । जैसे आम, घर, हवा, पानी आदि
- जीव अमूर्त (बिन-मूर्त) है, अर्थात् जीव में स्पर्श, रस, गंध, वर्ण नहीं हैं ।

जीव तत्त्व कौन?

स्वयं का
जीव

ये जीव तत्व है कि अजीव तत्व?

- अलमारी
- मेरा आत्मा
- मेरे कर्म
- गुलाब जामुन
- टी. वी
- कम्प्युटर
- सहेली
- बच्चे
- पति
- पति की आत्मा
- मेरे वचन
- मेरी आंखें



जीवतत्त्व के विषय में मिथ्यात्व

पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल ।
ताकों न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान ॥ ३ ॥

- ▶ नभ= आकाश
- ▶ इनतैं= इनसे
- ▶ न्यारी= भिन्न
- ▶ जीव चाल= जीव का स्वभाव
- ▶ ताकों=उस स्वभाव को
- ▶ न जान= नहीं जानता
- ▶ मान करि= मानकर
- ▶ करै= करता है
- ▶ देह में= शरीर में
- ▶ निज= आत्मा की
- ▶ पिछान= पहिचान

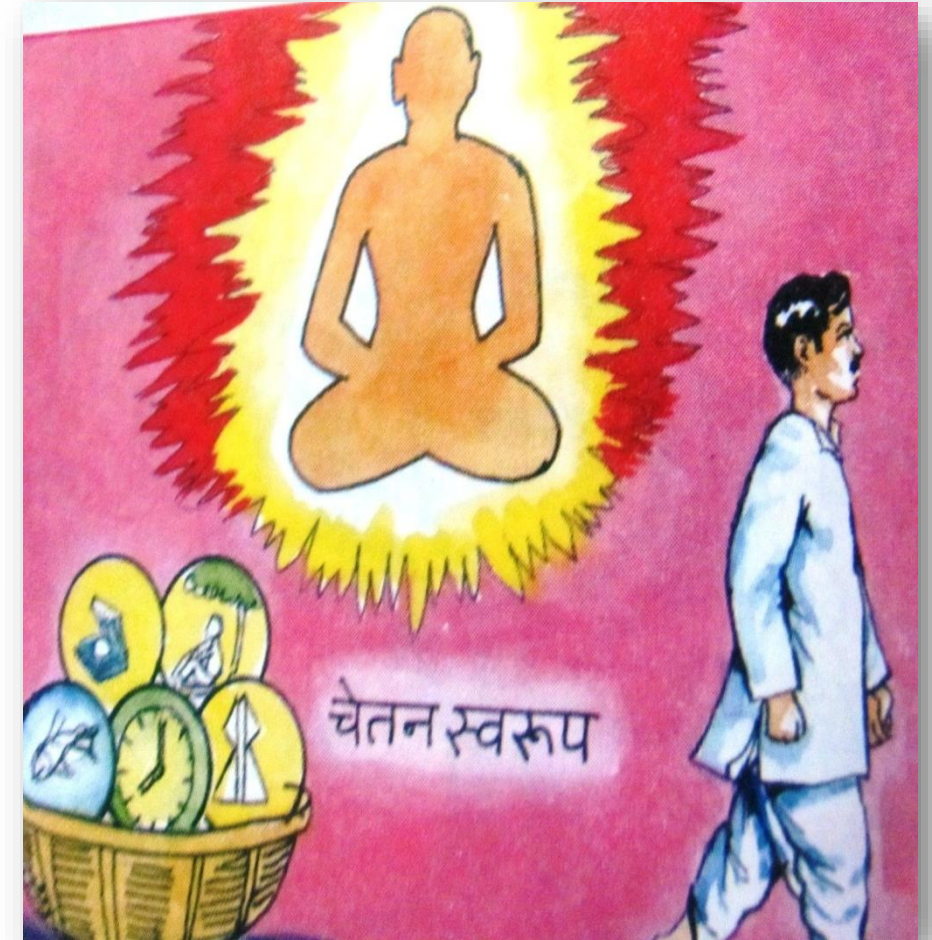


पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल, इनतैं न्यारी है जीव चाल ।
ताकों न जान विपरीत मान, करि करै देह में निज पिछान ॥ ३ ॥

पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये पाँच
अजीव तत्त्व हैं।

जीव का स्वरूप इनसे अत्यंत भिन्न है।

किन्तु यह जीव ऐसा न जानकर, उससे विपरीत
देहादि अजीव तत्त्व में अपनापन मानता है।



चाल

अर्थात्=
स्वभाव,
गुण,
परिणति

“ पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल,
इनतें न्यारी है जीव चाल।”

चाल

स्वभाव =

गुण =

परिणति =

जीव

चैतन्यमय

ज्ञान

उपयोगरूप

पुद्गल

पूरण-गलन

स्पर्शादि

रुखादि

ऐसे ही धर्म, अधर्म, आकाश, काल की चाल जीव से न्यारी है ।

जीव (स्वयं)

- चेतना गुण सहित
- अमूर्तिक
- असंख्यात प्रदेशी एक अखण्ड द्रव्य

पुद्गल (मुख्य रूप से शरीर)

- चेतना गुण रहित (जड़)
- मूर्तिक
- अनन्त परमाणुओं का पिण्ड

“ताको न जान विपरीत मान,
करि करे देह मे निज पिछान”

- पुद्गलादि को अपने से भिन्न न जान अपने मानता है।
- शरीर से ही अपनी पहचान मानता है।

धर्मादि द्रव्यों की परिणति अपनी मानना

- मैंने चलाया
- मैंने रोका
- मैंने ठहराया
- मैंने परिणमाया



मिथ्यादृष्टि का शरीर तथा परवस्तुओं सम्बन्धी विचार

मैं सुखी दुखी मैं रंक राव, मेरे धन गृह गो-धन प्रभाव ।
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीण॥४॥
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।

- रंक= निर्धन,
- राव= राजा हूँ,
- धन= रुपया-पैसा
- गृह= घर
- गो-धन= गाय, भैंस
- प्रभाव= बड़प्पन
- मेरे सुत= मेरी संतान
- तिय= मेरी स्त्री
- सबल= बलवान,
- दीन= निर्बल,
- बेरूप= कुरूप,
- सुभग= सुन्दर,
- मूरख= मूर्ख
- प्रवीण= चतुर हूँ
- तन= शरीर के
- उपजत= उत्पन्न होने से
- अपनी= अपना आत्मा
- जान= ऐसा मानता है और
- नशत= नाश होने से
- आपको= आत्मा का
- नाश= मरण

मैं सुखी दुखी मैं रंक राव, मेरे धन गृह गो-धन प्रभाव ।
मेरे सुत तिय मैं सबल दीन, बेरूप सुभग मूरख प्रवीण॥४॥
तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।

- अज्ञानी जीव ऐसा मानता कि - मैं सुखी- मैं दुखी, मैं निर्धन, मैं राजा,
- मेरा धन, मेरा घर, मेरे गाय भैंसादि, मेरा प्रभाव है,
- मेरे पुत्र, मेरी पत्नि है, मैं बलवान हूं, मैं निर्बल हूं,
- मैं कुरूप, मैं सुन्दर हूं, मैं मूर्ख हूं, मैं चतुर हूं
- शरीर की उत्पत्ति में अपनी उत्पत्ति और नाश में अपना नाश मानता है



जीव और अजीव तत्व संबंधी भूल

जीव को अजीव
मानना

जीव तत्व
संबंधी भूल

अजीव को जीव
मानना

अजीव तत्व
संबंधी भूल

जीव को अजीव कैसे मानता है ?

- स्व को भूलकर और
- स्व से अन्य अजीव तत्त्व में अपनापन स्थापित कर

□ कैसे?

- अजीव तत्त्वों में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व स्थापित कर

एकत्व

अहंबुद्धी

मैं

ममत्व

ममबुद्धी

मेरे

कर्तृत्व

कर्तापना

मैंने किया

भोक्तृत्व

भोक्तापना

मैंने भोगा

एकत्व (अहंबुद्धी)

- ❖ मैं सुखी
- ❖ मैं दुखी
- ❖ मैं गरीब
- ❖ मैं अमीर
- ❖ मैं बलवान
- ❖ मैं निर्बल
- ❖ मैं कुरूप
- ❖ मैं सुन्दर
- ❖ मैं गवार
- ❖ मैं होशियार

- ❖ मैं दुबला
- ❖ मैं महिला
- ❖ मैं पुरुष
- ❖ मैं गंजा
- ❖ मैं रोगी
- ❖ मैं निरोगी

अ. अ. अ.
अ. अ. अ.
अ. अ. अ.

स्वयं के -

- ज्ञानादि स्वभाव में
- क्रोधादि विभाव में
- पुद्गल के - वर्णादि में

ममत्व (ममत्व बुद्धि)

- ❖ मेरा धन
- ❖ मेरा घर
- ❖ मेरा गायादि पशु धन
- ❖ मेरा ऐश्वर्य
- ❖ मेरा पुत्र
- ❖ मेरी पत्नि
- ❖ मेरी आंखे
- ❖ मेरे गहने
- ❖ मेरी गाड़ी
- ❖ मेरा गोरा शरीर
- ❖ मेरे लम्बे बाल

ममत्व
बुद्धि
करता
है

- धनादि अचेतन पदार्थ मेरे
- पुत्रादि चेतन पदार्थ मेरे
- शरीर की अवस्था मेरी

कर्तृत्व

पुद्गल का बोलना, चलना, फिरना तो यह जीव ही करता है ना?

- मैंने कहा
- मैंने खाना बनाया
- मैंने वजन घटाया

नहीं, पुद्गल में उसकी क्रियावती शक्ति होती है, उसकी ही शक्ति से स्वयं उसमें रूपान्तर होकर अनेक क्रियायें होती रहती हैं।

शरीराश्रित वचन और काय की क्रिया अपनी मानता

मैंने डांटा

मैंने बच्चे को
जन्म दिया

मैंने उपदेश दिया

मैंने उपवास
किया

भोक्तृत्व

- मैंने टी वी देखी
- मैंने गाना सुना
- मैंने खाना खाया
- मैं सोया

आत्मा पर-वस्तु का
वेदन नहीं करता,
पर के प्रति राग के
वेदन से भोगा -
ऐसा मानता है ।

सही मानना

शरीर में वर्णादि है

भोजन का अस्तित्व
स्वयं से है

शरीर में चेतनता
नहीं है

गलत मानना

मैं काला हूँ

मैंने खाना बनाया

शरीर चेतन है



अजीव को जीव कैसे मानता है ?

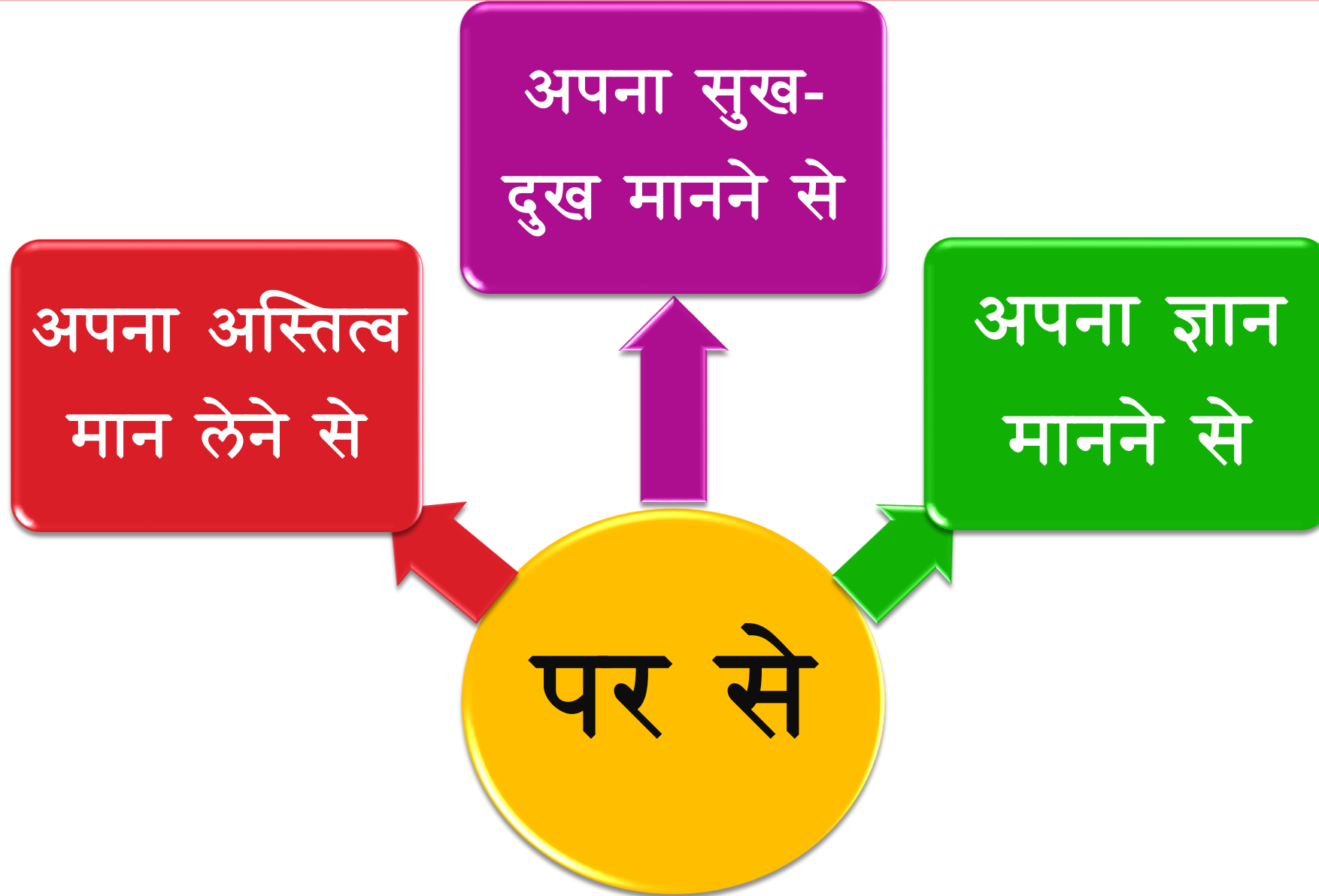
“तन उपजत अपनी उपज जान,
तन नशत आपको नाश मान॥”

❖ शरीर की उत्पत्ति में
अपनी उत्पत्ति

❖ और नाश में अपना
नाश मानना



अजीव को जीव कैसे मानता है ?



सही मानना

जीव में सुख है

जीव में ज्ञान है

जीव का अस्तित्व
स्वयं से है

गलत मानना

खाने में सुख है

कान, आंख, मन
से जाना

शरीर, पत्नी, बच्चे, धन
से मेरा अस्तित्व है

भूल बताओ

1. बेटे से वंश चलता है
2. परिवार ही मैं हूँ
3. मॉडल जैसी काया होने पर मैं सुखी होऊंगी
4. बच्चा सुखी तो मैं सुखी, वो दुखी तो मैं दुखी
5. मुझे टी वी से ज्ञान हुआ
6. मैं कपड़े को छूकर ही पहचान लेती हूँ
7. आज मेरा जन्मदिन है

आस्रव-तत्त्व संबंधी विपरीत श्रद्धा

रागादि प्रगट ये दुःख देन,
तिनही को सेवत गिनत चैन॥५॥

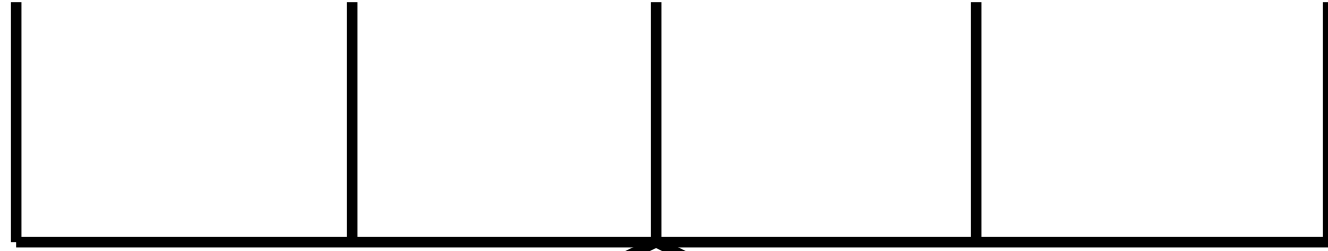
- रागादि= राग, द्वेष, मोहादि
- प्रगट= स्पष्ट रूप से
- ये= जो
- दुःख देन= दुःख देने वाले हैं
- तिनही को= उनकी
- सेवत= सेवा करता हुआ
- गिनत= मानता है
- चैन= सुख

रागादि प्रगट ये दुःख देन,
तिनही को सेवत गिनत चैन॥५॥

- राग-द्वेषादि भाव प्रत्यक्ष में दुःख को देने वाले हैं, यह जीव ऐसा न जानकर उनको करके अपने में ही सुख मानता है



आस्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष



द्रव्य

भाव

द्रव्य तत्त्व

कर्माँ	का आना	- आस्रव
	का आत्मा से संबंघ होना	- बन्ध
	का आना रुकना	- संवर
	का एकदेश खिरना	- निर्जरा
	का सम्पूर्ण नाश	- मोक्ष

भाव तत्त्व

शुभ-अशुभ भावों

की उत्पत्ति

- आस्रव

का बने रहना

- बन्ध

शुद्ध भावों की

उत्पत्ति

- संवर

वृद्धि

- निर्जरा

पूर्णता

- मोक्ष

आस्रव

भावास्रव

जिन योग, मोहादि भावों के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्म आते हैं, उन योग, मोहादि भावों को भावास्रव कहते हैं।

द्रव्यास्रव

भावास्रव के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्मों का स्वयं आना द्रव्यास्रव है।

आस्रव कैसे हैं?

वर्तमान में

दुःख रूप

भविष्य के लिए

दुःख के कारण

आस्रव तत्त्व संबंधी भूल

मोह, राग,
द्वेष भावों को

सुखकर
मानना

राग से वर्तमान में दुख कैसे ?

शरीर, पति, पत्नी, बच्चे आदि के प्रति मोह, राग करता है

तब राग से ही सुख-दुख होता है

स्वयं के
कषाय भाव

दुःख के
कारण

परन्तु जीव वृथा अन्य को दुःख
उत्पन्न करने वाला मानता है

मिथ्यात्व-कषायादि भाव को

अपना
स्वभाव
मानता

कर्म के निमित्त से
उत्पन्न विभाव नहीं
मानता

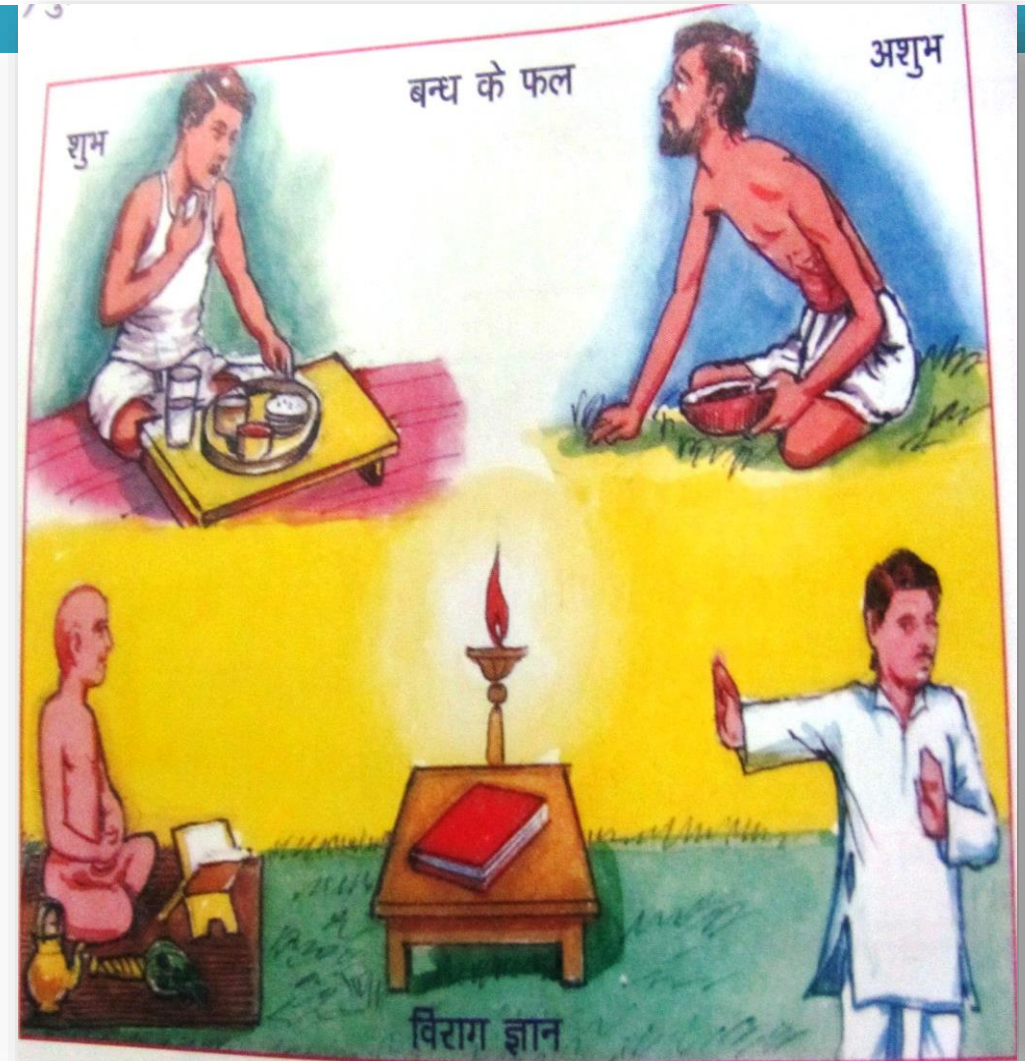
बंध और संवर तत्त्व की विपरीत श्रद्धा

शुभ-अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करै निज पद विसार आत्महित हेतु विराग ज्ञान, ते लखै आपको कष्टदान॥६॥

- ❖ शुभ= अच्छे
- ❖ अशुभ= बुरे फल
- ❖ बंध के= कर्मबंध के
- ❖ फल मंझार= फल में
- ❖ रति= प्रेम
- ❖ अरति= द्वेष करता है
- ❖ करै= करता है
- ❖ निज पद= आत्मा के स्वरूप को
- ❖ विसार= भूलकर
- ❖ आत्महित= आत्मा के हित के
- ❖ हेतु= कारण हैं
- ❖ विराग= राग-द्वेष का अभाव
- ❖ ज्ञान= सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन
- ❖ ते= उन्हें
- ❖ लखै= मानता है
- ❖ आपको= आत्मा को
- ❖ कष्टदान= दुःख देनेवाले

शुभ-अशुभ बंध के फल मंझार, रति-अरति करै निज पद विसार
आत्महित हेतु विराग ज्ञान, ते लखै आपको कष्टदान॥६॥

- मिथ्यादृष्टी जीव शुभ अशुभ भावों के फल पुण्य-पाप में रति अरति कर स्वयं को भूल जाता है।
- आत्मा का हित वैराग्य और ज्ञान में है और यह उसे कष्टदायी मानता है।



बंध

भाव बंध

आत्मा का अज्ञान,
मोह-राग-द्वेष, पुण्य-
पाप आदि विभाव
भावों में रुक जाना
भाव-बंध है।

द्रव्य बंध

उसके निमित्त से
पुद्गल का स्वयं
कर्मरूप बंधना द्रव्य-
बंध है।

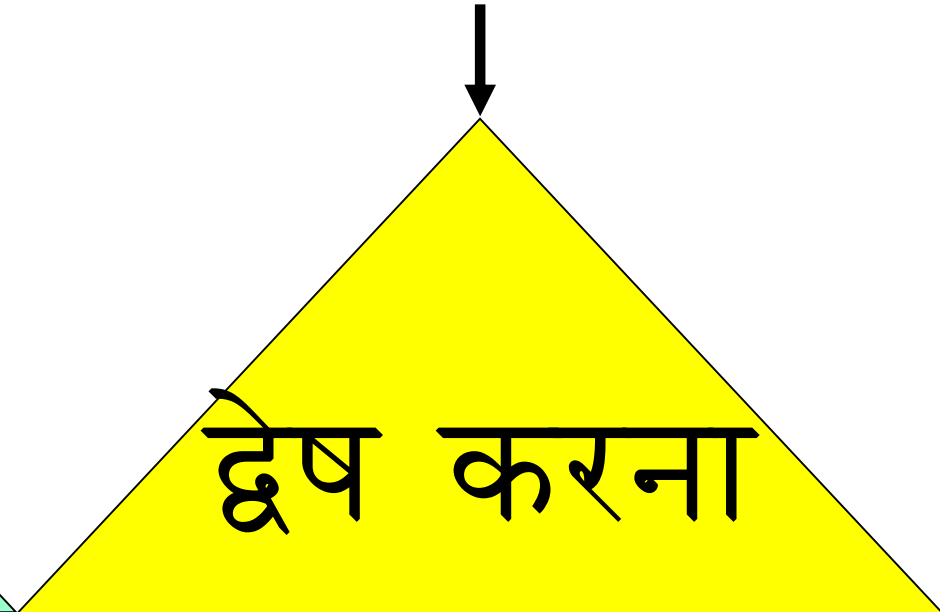
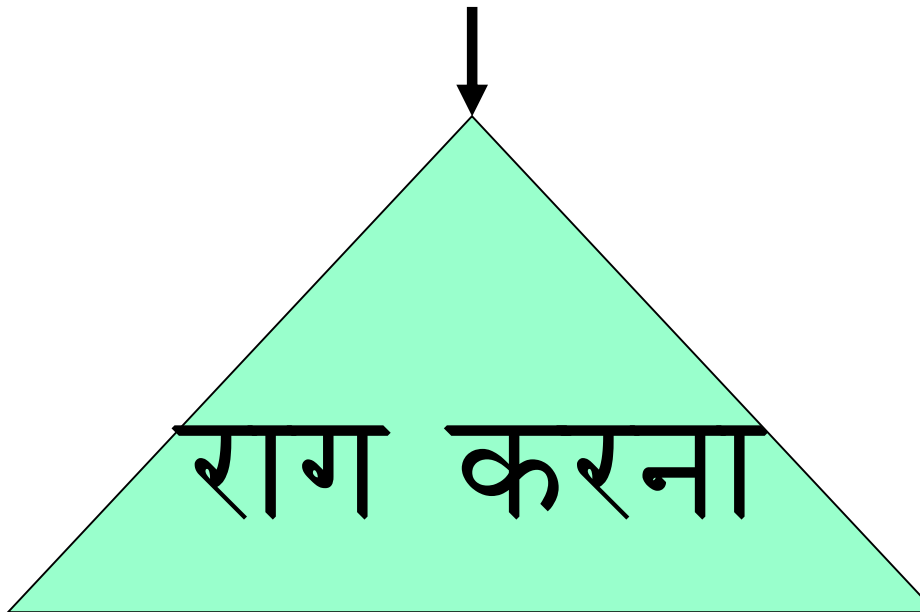
बंध तत्त्व संबंधी भूल

शुभ अशुभ बंध के फल मंझार,
रति अरति करे निज पद विसार

अपने आत्म-स्वरूप को भूल कर

- शुभ कर्म में
- शुभ कर्मों के फल में

- अशुभ कर्म में
- अशुभ कर्मों के फल में



अशुभ कर्मों का फल



शुभ कर्मों का फल



अशुभ कर्मों के फल में द्वेष

- बीमार हो जाने पर
- चोट लगने पर
- गरीब होने पर
- मौसम खराब होने पर
- अच्छे कुटुम्बी नहीं मिलने पर

शुभ कर्मों के फल में राग

- अच्छे कुटुम्बी मिलने पर
- धनी होने पर अच्छा लगना
- सुन्दर होने पर अच्छा मानना
- अच्छा खाना-पीना मिलने पर सुख मानना
- लोगों के द्वारा अपनी प्रशंसा, बढाई में अच्छा मानना

आस्रव और बंध तत्त्व संबंधी भूल में अंतर

आस्रव तत्त्व संबंधी भूल

कर्म आना अच्छा मानना

दुःखरूप रागादि में सुख
मानना

रागादि को अपना स्वभाव मानना

बंध तत्त्व संबंधी भूल

कर्म का फल अच्छा मानना

रागादि के फल में सुख-दुख मानना

रागादि के फल में अपने को कर्ता
मानना

संवर

भाव-संवर

पुण्य-पाप के विकारी भाव
(आस्रव) को आत्मा के
शुद्ध (वीतरागी) भावों से
रोकना सो भाव-संवर है।

द्रव्य-संवर

नये कर्मों का
स्वयं आना रुक
जाना द्रव्य-संवर
है।

संवर तत्त्व संबंधी भूल

आत्म हित हेतु विराग-ज्ञान,
ते लखे आपको कष्टदान।

आत्मा के
हित के
कारण

ज्ञान = सम्यग्ज्ञान

वैराग्य = संसार, शरीर
और भोगों से उदासीनता

परन्तु इन्हें कष्ट देने वाला मानना

कैसे?

आत्मज्ञान की
प्राप्ति के कारणों
से विरक्त रहता
है।

संवर कैसे हैं?

वर्तमान में

सुख रूप

आगामी

सुख का कारण

जब आस्रव दुखदायक लगेगा




तो आत्मज्ञान मे हित लगेगा



तो संवर का सम्यक् श्रद्धान हो ही जायेगा

जिसे
आस्रव
तत्त्व
संबंधी भूल
है

- उसे संवर तत्त्व संबंधी भूल है ही
- जो राग में सुख मानता है
 - वो वैराग्य में सुख कैसे मानेगा



निर्जरा और मोक्ष की विपरीत श्रद्धा तथा
अगृहीत मिथ्याज्ञान

रोके न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय ।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुखदायक अज्ञान जान॥७॥

- चाह= इच्छा को न
- निजशक्ति= अपने आत्मा की शक्ति
- खोय= खोकर
- शिवरूप= मोक्षका स्वरूप
- निराकुलता= आकुलता के अभाव को
- न जोय= नहीं मानता
- याही= इस
- प्रतीतिजुत= मिथ्या मान्यता सहित
- कछुक ज्ञान= जो कुछ ज्ञान है
- सो= वह
- अज्ञान= अगृहीत मिथ्याज्ञान है

रोके न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय ।
याही प्रतीतिजुत कछुक ज्ञान, सो दुखदायक अज्ञान जान॥७॥

निर्जरा
तत्त्व की
भूल :

शुभाशुभ इच्छा तथा पाँच इन्द्रियों के विषयों की
चाह को रोकना दुखरूप मानना - यह निर्जरातत्त्व
की विपरीत श्रद्धा है ।

मोक्ष
तत्त्व की
भूल :

पूर्ण निराकुल आत्मिक सुख की प्राप्ति मोक्ष का
स्वरूप है तथा वही सच्चा सुख है; किन्तु अज्ञानी
ऐसा नहीं मानता ।

निर्जरा

भाव-निर्जरा

ज्ञानानन्द-स्वभावी आत्मा के लक्ष्य के बल से स्वरूप-स्थिरता की वृद्धि द्वारा आंशिक शुद्धि की वृद्धि और अशुद्ध (शुभाशुभ) अवस्था का आंशिक नाश करना सो भाव-निर्जरा है।

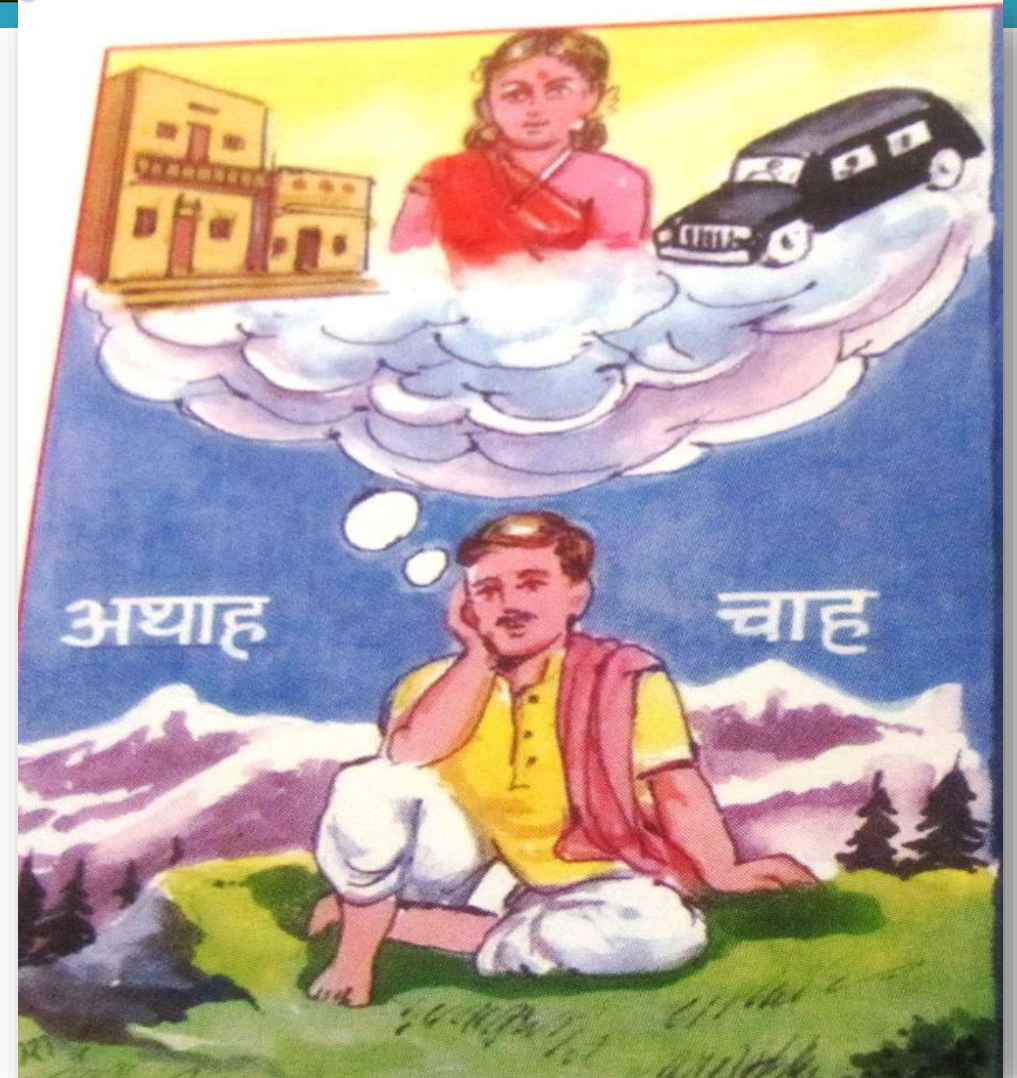
द्रव्य-निर्जरा

उसका निमित्त पाकर जड़ कर्म का अंशतः खिर जाना सो द्रव्य-निर्जरा है।

निर्जरा तत्त्व संबंधी भूल

रोके न चाह निज
शक्ति खोय

- आत्म शक्ति को भूल कर
- अपनी इच्छाओं का अभाव नहीं करना



बंधे हुए कर्मों का एकदेश
अभाव निर्जरा है

जो बन्धन हुए कर्मों से
दुख होना न जाने, वो
कर्मों की निर्जरा का क्या
उपाय करेगा?

निर्जरा कैसे होती है?

तप से ही निर्जरा होती है।

इच्छाओं का निरोध ही तप है।

अर्थात् इच्छाओं का उत्पन्न ही नहीं होना ।

निर्जरा तत्त्व संबंधी भूल

इच्छाओं

की पूर्ति में

सुख मानना

के अभाव में

सुख नहीं
मानना

निर्जरा तत्त्व संबंधी भूल

- ❖ class जायेंगे, तो रात को खाना छोड़ना पड़ेगा
- ❖ आहार देंगे, तो नियम लेना पड़ेगा
- ❖ मुनिराज को कितना कष्ट सहना पड़ता है, हम तो यह नहीं कर सकते।
- ❖ उपवास में दुख होता है – ऐसा मानना
- ❖ बाहरी उपवास से ही निर्जरा मान लेना।

जिसे बंध तत्त्व संबंधी भूल है



उसे निर्जरा तत्त्व
संबंधी भूल है ही

वो इच्छा पूर्ति में
सुख मानेगा ही

क्योंकि शुभ कर्म के
फल को चाहता है।

मोक्ष

भाव मोक्ष

अशुद्ध दशा का सर्वथा सम्पूर्ण नाश होकर आत्मा की पूर्ण निर्मल पवित्र दशा का प्रकट होना भाव-मोक्ष है ।

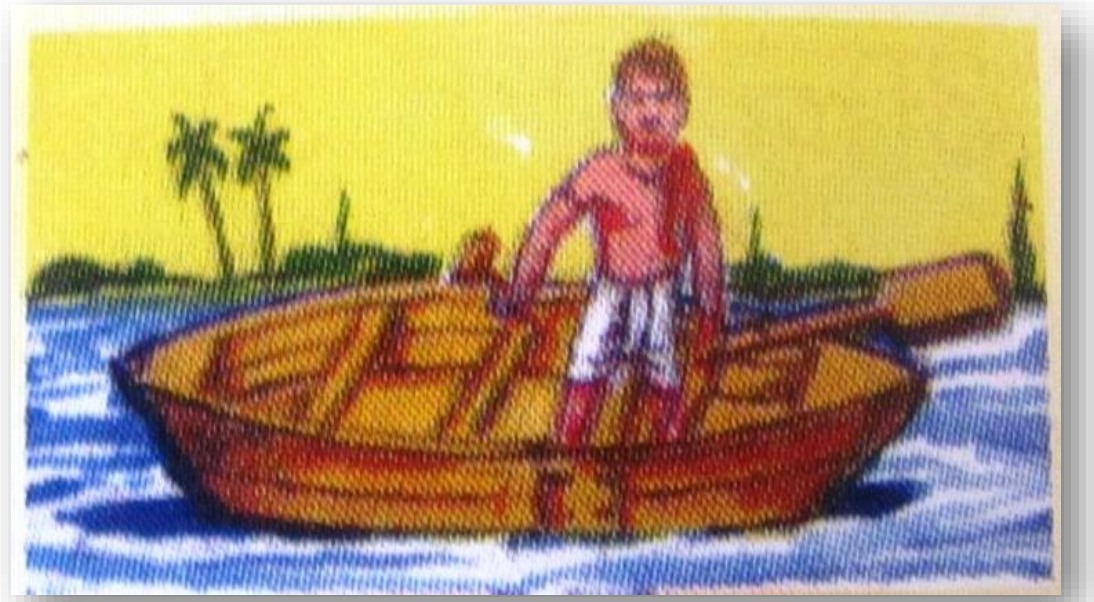
द्रव्य मोक्ष

निमित्त कारण द्रव्यकर्म का सर्वथा नाश (अभाव) होना सो द्रव्य-मोक्ष है।

मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल

शिव रूप निराकुलता न जोय॥

*मोक्ष में निराकुलता
रूप सच्चे सुख को
नहीं जानना



क्या मानता है?

अभी हमें कम सामग्री प्राप्त है
इसीलिये कम सुखी हैं।

मोक्ष में अनन्तगुना सामग्री प्राप्त होगी
तो अनन्त सुखी हो जायेंगे।

अर्थात्

मोक्ष सुख की जाति नहीं पहचानता

मोक्ष में भी इन्द्रिय सुख की जाति की
कल्पना करता है।

कैसा है इन्द्रिय सुख?

पराधीन

विषम

विच्छिन्न

कर्मबंधन का कारण

आकुलतामय

कैसा है मोक्ष सुख?

सम

अतीन्द्रिय

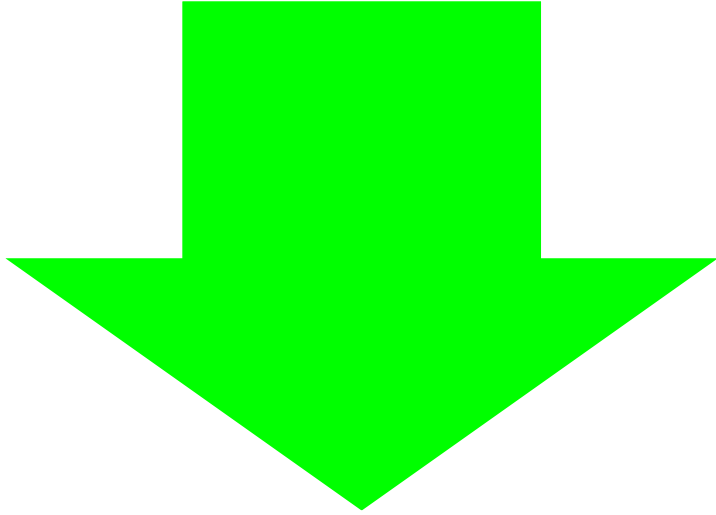
अविच्छिन्न

निराकुल

स्वतंत्र



कर्मबंध का
अभाव सो
मोक्ष



मोक्ष को दुखरूप
माना

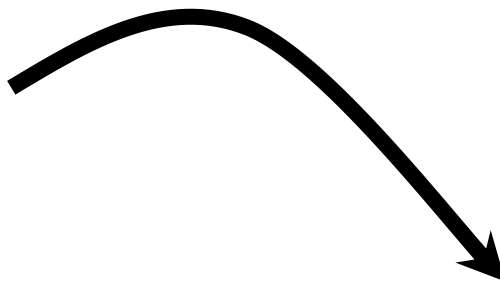


बंध को सुखरूप
माना





जिसे बंध
तत्त्व
संबंधी
भूल है

- 
- उसे मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल है ही
 - पुण्य के फल (आकुलता) में सुख मानने वाला
 - निराकुलता के सुख को नहीं जानता

किस तत्त्व संबंधी भूल होने पर अन्य किस
तत्त्व संबंधी भूल होगी

जीव	अजीव
आस्रव	संवर
बंध	निर्जरा और मोक्ष

जिसे एक तत्त्व संबंधी भूल है,
उसे सातों तत्त्वों संबंधी भूल है

कैसे १ तत्त्व नहीं जानने पर ७ तत्त्व संबंधी भूल होती है?

जीव को नहीं जाना तो

तो अजीव को अपना माना

तो उसमें राग होगा

तो राग में सुख मानेगा

तो बंध को दुखदायक नहीं मानेगा

तो संवर, निर्जरा और मोक्ष हितरूप नहीं लगेंगे

१ शब्द में

पर की रुचि, पर में अपनापन



सात तत्त्व संबंधी भूल

हेय – ज्ञेय – उपादेय

जीव

परम उपादेय

अजीव

ज्ञेय

आस्रव-बंध

हेय

संवर-निर्जरा

एकदेश उपादेय

मोक्ष

पूर्ण उपादेय

- Reference : तत्त्वार्थसूत्रजी, मोक्षमार्गप्रकाशकजी
- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact
 - sarikam.j@gmail.com
 - <http://Jainkosh.org>
 - ☎: 94066-82889